International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ना सरा शर्मा के साहित्य में दो भन्न संस्कृतियों में वर्ग चेतना :

डॉ पूरणमल वर्मा, सह आचार्य,
आयुक्तालय कालेज शक्षा निदेशालय
जे एल एन मार्ग जयपुर

दो भन्न संस्कृतियों मे सामंजस्य के

परिचयात्मक स्वरूप:------ हिंदी कथा साहित्य की सरमौर कथाकार ना सरा जी की कहानियो मे समन्वय स्पस्ट दृष्टिगोचर होता है।ना सरा का जन्म प्रो, जा मन अली के घर शया परिवार मे 22 अगस्त 1948 को इलाहाबाद मे हुआ। पता के प्रगतिशील वचारो के प्रभाव ने ना सरा को प्रभा वत कया। ।ना सरा जी नारी होने के कारण नारी जनो चत व्यवहार का सम्यक पालन करते हुए हिन्दू मुस्लिम समुदाय को परस्पर सहयोग ,प्रेम ,त्याग व समर्पण भाव लए साहित्य सृजन कया। हिंदी महिला कथाओ में ना सरा शर्मा ने अपनी कथाओं के माध्यम से स्त्री जीवन में होने वाली व भन्न घटनाक्रम की घटनाओं तथा स्त्री के साथ होने वाले दुराचार व असामयिक मनुष्य ईर्ष्या भेदभाव एवं लंग भेद की नीति का वर्णन स्पष्ट पर ल क्षत है जिसके कारण समाज में व्याप्त वसंगतियां एवं नारी जीवन से जुड़ी हुई व भन्न समस्याओं का वर्णन उपन्यास एवं कहानी सभी में सम्यक रूप से प्रस्तुत कया है।

हिंदी कथा साहित्य में महिला कथा कारों में जो ऊर्जा आज वद्यमान है उस ऊर्जा के स्वरों में आक्रामक स्वर यदि कहीं कथाओं में देखने को मलता है तो वह ना सरा शर्मा की कथा साहित्य में देखा जा सकता है। वर्तमान परिस्थितियों का यदि चन्ह अवलोकन करें तो लाला जी की कहानियों में हिंदू एवं मुस्लिम संस्कृति के सामान्य दृष्टिकोण का शुरू स्वरूप स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है इनकी कहानियों में सामाजिक वेदना पीड़ा की अनुभूति होती है जो नारी संघर्ष की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अद् वतीय एवं प्रासं गक घटनाक्रम से अभी प्रेरित है समकालीन तथा कारों में महिला कथाकार होने जो जागृति पैदा की है वह नारी शक्ति के लए महती भू मका का कार्य कर रही है और भावी पीढ़ी के लए नूतन वचारों को लेकर प्रेरणा का स्रोत भी बनरही है।जिनका क्रयान्वयन सुनिश्चित कर मन खन्न हुए नही रह सकता।

"म र्सया, सोज,नौहे लखने ओर पेनेटा रिवाज कई पुश्तो से था।गजल का कहना ओर सुनाना,घर के आदाब मे शा मल था।उस खानदान मे कलम उठाना उपलब्धि नही थी बल्कि ऐसा कुछ लखना चुनौति थी,जो परिवार के स्तर से नीचे का न हो। इसका अपना तनाव ओर लुत्फ दोनो है।1 ले खका का अपना वचार रहा क समाज ,परिवार ओर देश के लए मे सदैवसम र्पत रहूगी। पुरातन परम्परा त्याग कर नवीन के प्रति आग्रह का दृष्टिकोण जीवनमूल्य घटनाक्रम और मन प्रसन्न होकर जगत पर आधारित एक बार फर नारी जीवन संघर्ष पध पर प थक बनकर जीवन व्यतीत करते हुए एक आदर्श की मसाल पेश करती है।इसी सन्दर्भ मे ना सरा ने परस्पर दो संसकृतियो की एकता अखण्ता को कायम रखने को बात की है।

संस्कृति' का शाब्दिक अर्थ एवं पारिभा षक स्वरूप : संस्कृति' शब्द संस्कार का रूपान्तरण है। व्यक्ति के जीवन को परिमार्जित करते के लए अनेक प्रकार के संस्कारों की व्यवस्था की गई है। संस्कारवान मनुष्य ही सभ्य सुसंस्कृत कहलाता है। कसी भी समाज की लौ कक समृ द्ध या रहन-सहन को उसकी सभ्यता के नाम से जाना जाता है। सभ्यता का सम्बन्ध भौतिक जीवन पद्धति से है। समाज के लोगों के रहन-सहन की वह पद्धति या रीति-नीति जो मान सक, बौ द्धक एवं आध्यात्मिक वै शष्ट्य की घोतक है, संस्कृति है। मनुष्य की जीवन-चेतना ही संस्कृति का निर्माण करती है।शाब्दिक दृष्टि से देखा जाए

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तो 'सम' उपसर्ग एवं 'कृ' धातु के योग से संस्कृति शब्द बना है। वाचस्पति गैरोला ने संस्कृति की ववेचना करते हुए लखा है "संस्कृति अर्थात् सम्=उत्तम कृति-चेष्टाएँ।"2 इस दृष्टि से वे उत्तम अ भव्यक्तियाँ ही संस्कृति हैं, जिनके द्वारा मानव को व शष्टता प्राप्त है। हिन्दी शब्द सागर के अनुसार संस्कृति का अर्थ है "1. शु द्ध / सफाई 2. संस्कार सुधार/मान सक वकास/ 3. सजावट 4. सभ्यता/शाइस्तगी।3

संस्कृति मानव समुदाय के वे आचार व्यवहार हैं जिनसे वकास की स्पष्ट झलक मलती है। अर्थ की व्यापकता के कारण इसे परिभाषा की परि ध में बाँधना कठिन है, कन्तु इस संबंध में कुछ वद्वानों के वचारों को जानना इसके मूल स्वरूप को पहचानने हेतु आवश्यक है।डॉ. गुलाबराय ने छान्दग्योपनिषद के अनुसार संस्कृति शब्द का वश्लेषण कया है, उनके अनुसार संस्कृति शब्द का सम्बन्ध संस्कार से है, जिसका अर्थ संशोधन करना, उत्तम बनाना, परिष्कार करना।4डॉ. संपूर्णानन्द ने संस्कृति को परिभा षत करते हुए लखा है "मानव का प्रत्येक वचार, प्रत्येक कृति संस्कृति नहीं है पर जिन कालों से कसी देश- वशेष के समस्त समाज र कोई अ मट छाप पड़े वही स्थायी प्रभाव ही संस्कृति है। संस्कृति वह आधार शला है, जिसके आश्रय से जाति, समाज व देश का वशाल, भव्य प्रासाद नि र्मत होता है।"5श्री सत्यकेतु वद्यालंकार के अनुसार " चन्तन द्वारा अपने जीवन को सुन्दर और कल्याणमय बनाने के लए मनुष्य जो प्रयत्न करता है उसका परिणाम संस्कृति के रूप में प्राप्त होता है।6

राष्ट्रीय क व के अनुसार "संस्कृति एक ऐसा गुण है जो हमारे जीवन में छाया हुआ है, यह एक आत्मिक गुण है जो मनुष्य स्वभाव में उसी प्रकार व्याप्त है जिस प्रकार फूलों में सुगन्ध और दूध में मक्खन । इसका निर्माण

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एक या दो दिन में नहीं होता युग युगान्तर में होता है। जिस प्रकार संस्कृतिजन्य गुणों का निर्माण कठिन है, उसी प्रकार इनका नष्ट होना भी। संस्कार हजारों साल में नि र्मत होते हैं, अतएव प्रत्येक देश की संस्कृति भन्न होती है।7

*हमारे पूर्वजों द्वारा जीवन को वक सत तथा अ धक समृद्ध करने के लए अनेक नियमों को निश्चित कर रीति-रिवाजों की नींव डाली गई । इनके महत्व के सम्बन्ध में स्वयं ना सरा शर्मा के वचार उल्लेखनीय हैं 'बड़ों की कही बातों में बड़ा दम होता है, क्यों क बरसों के तजुर्बे के बाद वह कोई फैसला लेकर तब रीति-रिवाज की बुनियाद डालते थे।" 8संस्कृति का निर्माण एक निश्चित समय में न होकर निरन्तर बदलती परिस्थितियों के अनुरूप होता रहता है। इसमें पुरानी रूढ़ियाँ या समय के अनुसार महत्वहीन हुई प्रथा व आदतों का त्यागना तथा नवीन वचारों को ग्रहण करना भी अत्यावश्यक है। इसी व्यापक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने वाले कुछ वचार निम्नानुसार हैं।डॉ. श्रीनिवास संस्कृतीकरण को परिभा षत करते हुए अपनी पुस्तक ' **Social Change in Modern India'** में लखते हैं "संस्कृतीकरण का अर्थ केवल नवीन प्रथानी व आदतों को ग्रहण करना ही नहीं अ पतु प वत्र एवं लौ कक जीवन से सम्बन्धित नये वचारों एवं मूल्यों को भी प्रकट करना है।"9*

संस्कृति की चेतना भू म को स्पष्ट करते हुए डॉ. आर.डी. मश्र का कथन है "अतीत की समृ द्ध जिसे काल की चेतना में पल्ल वत और पुष्पित होने के बाद धरोहर' और 'वरासत' की संज्ञा दी जाती है कालांतर में मानव की अनुप्रेरणा बनकर युग-युगांतर तक एक वृहद मानवीयता को अनुप्रा णत करती रहती है, यही संस्कृति की चेतना भू म है।10'संस्कृति' के शाब्दिक अर्थ एवं पारिभा षक स्वरूप पर वचार करने के पश्चात कहा जा सकता है क संस्कृति मनुष्य की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जीवन पद्धति, रहन-सहन, रीति-नीति, आचार वचार का नाम है जिसके कारण मनुष्य सभी प्रा णयों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। संस्कृति में सभ्यता के अतिरिक्त मनुष्य की मान सक, आध्यात्मिक तथा आ धभौतिक उन्नति भी निहित है जिससे मनुष्य के समस्त क्रयाकलाप एवं व्यवहार संचा लत व नियंत्रित होते हैं।

(ii) *संस्कृति और सामाजिक चेतना का अन्तः सम्बन्ध :'संस्कृति' की शाब्दिक ववेचना एवं उसके पारिभा षक स्वरूप पर वचार करने से स्पष्ट होता है क संस्कृति का सम्बन्ध मनुष्य जीवन को परिष्कृत करने एवं उसे उन्नति की पर आगे बढ़ाने से है। मनुष्य समाज की एक इकाई है। यदि मनुष्य स्वस्थ व संस्कारित तो समाज निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होता रहेगा, इसकी वपरीत स्थिति समाज के अवघातक है। रीति-रिवाज व परम्पराओं के आधार पर मनुष्य जीवन जीने के तौर-तरीके उता है एवं उन्हीं के अनुसार वह व्यवहार करता है। मनुष्य के क्रया-कलाप व आपसी वहार हा मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाते हैं। अपने कार्य व व्यवहार वह पशुवत रण नहीं कर सकता क्यों क उसके प्रत्येक कार्य व व्यवहार का सीधा असर समाज पर है, यही कारण है क प्रत्येक संस्कृति में मनुष्य के आचरण को परिष्कृत करने हेतु में न परम्पराएँ अस्तित्व में आईं।*

संस्कृति एवं समाज परस्पर पूरक हैं । जहाँ संस्कृति द्वारा मनुष्य की सोच प्रभा वत है, वहीं समाज द्वारा संस्कृति का निर्माण होता है। समाज के लोगों की मान सकता के ही रीति-रिवाजों व परम्पराओं का निर्माण होता है।उदाहरणस्वरूप भारतीय व पाश्चात्य संस्कृति को ही लें, जहाँ भारतीय संस्कृति ध्यात्मिकता को महत्व देती है वहीं पाश्चात्य संस्कृति भौतिकता को।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

*भारतीय संस्कृति सा को परम धर्म मानती है, वहीं पाश्चात्य दृष्टिकोण येन-केन प्रकारेण सफलता प्राप्त ला अपना एक मात्र लक्ष्य मानता है। पूर्व व पश्चिम के समाज की मान सकता का ही नाम है क भारतीय संस्कृति 'त्येन त्यक्तेन भुंजीथा' में वश्वास रखकर कार्य करने की गा देती है, वही पाश्चात्य संस्कृति 'खाओ-पीओ और मौज करो' की भावना अपने व्हार का आधार बनाती है। '**Killing Two Birds with one stone'**से जहाँ सात्मक प्रवृत्ति का आभास होता है, वहीं एक पंथ दो काज' से कार्य कुशलता व मधुरता । हैलो, हाय, गुड मॉर्निंग, गुड-नाइट अथवा हाथ मलाकर अ भवादन करना जहाँ त्वम का अपना ढंग है वहीं अ भवादन के लए प्रणाम, नमस्ते, सलाम, आदाब, पैर छूना वा गले मलना आत्मीयता के भावों को उजागर करता है।रीति-रिवाज व परम्पराएँ समाज के वकास साथ अपने स्वरूप में परिवर्तन का लेती हैं, यही कारण है क वे समाज की प्रगति के मार्ग में बाधक न बनकर सहायक होती हैं। अपने लचीलेपन के बावजूद संस्कृति के मूलभूत वचार अपना अस्तित्व सदैव बनाए रखते हैं।संस्कृति व्यक्ति को सदैव समाजोन्मुखी बनाने का कार्य करती है। 'त्यजेदकं कुलस्वार्थे ' की भावना जहाँ समष्टि के प्रति व्यष्टि के त्याग द्वारा सामाजिक हित को सर्वोपरि मानती है वहीं सर्वे भवन्तु सु खनः द्वारा भी सभी के हित से अपने हित को जोड़कर देखा गया है। यही भावना स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु आवश्यक है।*

शारीरिक एवं मान सक रूप से स्वस्थ मनुष्यों द्वारा ही स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है। भारतीय संस्कृति मनुष्य के सर्वांगीण वकास पर बल देती है ! वर्तमान समय में बालक के मान सक वकास पर तो ध्यान दिया जाता है कन्तु शारीरिक व आध्यात्मिक वकास गौण हो जाते हैं। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण (घृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रियनिग्रह, धी, वद्या, सत्य और अक्रोध) व्यक्तित्व निर्माण में सहायक माने गए हैं।'11सोलह संस्कारों का वधान भी मनुष्य के वकास में सहायक है। यज्ञोपवीत बाह्याडंबर मात्र न

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

होकर निरन्तर इस बात का स्मरण कराने हेतु धारण कया जाता है क व्यक्ति को देव ऋण, ऋ ष ऋण एवं पतृ ऋण अपने जन्म में उतारना है जो क यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, स्वाध्याय, माता- पता व गुरु के प्रति श्रद्धा भाव रखकर तथा गृहस्थ धर्म का पालन कर चुकाए जाते हैं । ये सभी व्यवस्थाएँ अन्ततः समाज से जुड़ी हुई हैं तथा समाज को बेहतर बनाने की दिशा में व्यक्ति के योगदान का आग्रह रखती हैं।

'वद्या ददाति वनयम्' संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है कन्तु दुर्भाग्यवश आज हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं परिणामस्वरूप आज वद्या का उद्देश्य वनय प्रास करना न होकर धन प्राप्त करना हो गया है। सर्वांगीण वकास को महत्व न देने का हीघृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इंद्रिय निग्रहः। धी र्वधा सत्यं अक्रोधो दशो धर्मस्य लक्षणं ।। - मनुस्मृति 12।

राष्ट्रीय एकता के मार्ग में भाषायी अलगाव बहुत बड़ी बाधा है। उर्दू हिन्दी के में ही हमारा साहित्य, हमारी संस्कृति और अंततः हमारी राष्ट्रीयता सुर क्षत है। मयाँ उर्दू-हिन्दी ववाद को बिल्कुल निरर्थक बताते हुए दोनों भाषाओं में वही बताते हैं जो दो बहनों का आपस में होता है। वे कहते हैं 'हिन्दी तो खुद बड़ी मोहनी वान है । उर्दू उसी का दूध पीकर तो बढ़ी है। उर्दू के जिस्म में हिन्दी का खून दौड़ रहा है। उस तरह उर्दू का बाप फारसी है, उसी तरह फारसी संस्कृत की बहन है। हाथ में चाकू लो और हिन्दी भाषा से एक-एक उर्दू का लफ्ज़ उर्दू जबान से एक-एक हिन्दी का शब्द निकालो..... लहूलोहान हो जायेंगी दोनों बहनें..... दोनों बेमौत मर जायेंगी। मगर मयाँ, इन बातों को उठाईगीर सयासत दाँ नहीं जानते हैं। उनकी सयासत बड़ी मुख्तसर होती है। अपने भाई का कत्ल कर उसकी जायदाद पर कब्जा करने तक।" 13

आमोख्ता' पंजाब में चल रहे आतंकवाद के कारण वीरजी के परिवार के तबाह हो जाने की कहानी है। उन्हें बचपन की घटना याद आती है जब वे भ्रा जी से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रभा वत होकर / गुरू साहब के चत्र के आगे माथा टेकते हैं। वे कहते हैं- "भ्रा जी से प्रभा वत पहली बार मैंने बड़ी श्रद्धा से ठीक उन्हीं के अंदाज से गुरु साहब के चत्र के आगे माथा टेका था और गुरुबानी के शब्दों का जाप मन-ही-मन दोहराया था। सरदार का रूप धरे बिना मैं सखी पर ईमान ले आया था। अब मंदिर और गुरुद्वारा दोनों ही मेरे लए प वत्र-पावन बन चुके थे। सरदारों के खुले स्वभाव ने सोने पर सुहागे का काम कया था और मैं बाबा फ़रीद और वारिस शाह में ऐसा डूबा क कबीर की राह पर निकल पड़ा। मेरे लए आपसी भेद-भाव मट गया था। मेरा एक ही धर्म था क सब इन्सान हैं, सब हिन्दुस्तानी हैं।"14मनुष्य कसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय का होने से पहले एक मनुष्य है! उसके सुख-दुख कसी भी स्थिति में अलग नहीं हो सकते तभी तो बेटी के दुख से दुखी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

१ जब समय दोहरा रहा हो इतिहास ना सरा शर्मापृ,9

2भारतीय संस्कृति के तत्व, आचार्य उमेश शास्त्री पृ,1

3 सं क्षप्त हिन्दी शब्द सागर, सं. रामचन्द्र वर्मा, पृ. 944

-4 भारतीय संस्कृति के तत्व, आचार्य उमेश शास्त्री, पृ. 2

5 वही, पृ.2

6 वही, पृ.2

7 दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृ.652

8 अक्षयवट ना सरा शर्मा, पृ. 198

9भारतीय समाज व संस्कृति, रवीन्द्र नाथ मुखर्जी, पृ. 339

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 6, June 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

10 साहित्य और संस्कृति व्यक्तिबोध से युगबोध, डॉ. आर.डी. मश्र, पृ. 16

11धृति क्षमा दमोसतेयं शौचं इंद्रिय निग्रह:धी र्वधा सत्यं अक्रोधो दशो धर्मस्य लक्षणं। ।मनुस्मृति

12 दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय पृ,596

13 कातिब,पत्थर गली कहानी संग्रह, ना सरा शर्मा 81

14आमोख्ता, इब्ने मरियम कहानी संग्रह, ना सरा शर्मा, पृ. १५